कविवर पंडित संतलालजी कृत

द्वितीय पूजा

सोलह गुण
सहित

श्री सिद्धचक्र विधान पूजा

: मधुर स्वर :

पण्डित सुनीलजी शास्त्री, राजकोट

सुश्री श्वेतल जैन, राजकोट

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

छप्पय

ऊरध अधो सु रेफ सबिंदु हंकार विराजे,
अकारादि स्वर लिप्त कर्णिका अन्त सु छाजे।
वर्गनिपूरित वसुदल अम्बुज तत्त्व संधिधर,
अग्रभाग में मंत्र अनाहत सोहत अतिवर।।
पुनि अंत ह्रीं बेढ़्यो परम, सुर ध्यावत अरि नाग को।
है केहरि सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्... अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानम्। ..
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।...
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दोहा

सूक्ष्मादिक गुण सहित हैं, कर्मरहित निरोग।
सिद्धचक्र सो थापहूं, मिटै उपद्रव योग।।

(इति यंत्रस्थापनार्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

हरिगीतिका

हिमशैल धवल महान कठिन पाषाण तुम जस रासतैं।
शरमाय अरु सकुचाय द्रव ह्वै बहो गंगा तासतैं।।
सम्बन्ध योग चितार चित भेंटार्थ झारी में भरूँ।
षोडष गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

हरिगीतिका

काश्मीर चन्दन आदि अन्तर-बाह्य बहुविधि तप हरै।
यह कार्य-कारण लखि नमित मम भाव हू उद्यम करै।।
मैं हूँ दुखी भवताप से घसि मलय चरनन ढिंग धरूँ।
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

हरिगीतिका

सौरभि चमक ज्यों सह न सकि अम्बुज वसैं सरताल में।
शशि गगन वसि नित होत कृश अहिनिश भ्रमै इस ख्याल में।।
सो अक्षतौघ अखण्ड अनुपम पुंज धरि सन्मुख धरूँ।
षोडष गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

हरिगीतिका

जग प्रकट काम सुभट विकट कर हट करत जिय घट जगा।
तुम शील कटक सुघट निकट सरचाप पटक सुभग भगा।।
इम पुष्पराशि सुवास तुम ढिंग कर सुयश बहु उच्चरूँ।
षोडष गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

हरिगीतिका

जीवन सतावत नहिं अघावत क्षुधा डाइन-सी बनी।
सो तुम हनी, तुम ढिंग न आवत, जान यह विधि हम ठनी॥
नैवेद्य के संकेत करि निज क्षुधा-नाशन विधि करूँ।
षोडष गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूँ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

हरिगीतिका

मैं मोह-अन्ध अशक्त अरु यह विषम भववन है महा।
ऐसे रुले को ज्ञानदुति बिन पार तारण हो कहाँ।।
सो ज्ञानचक्षु उघार स्वामी दीप ले पायनि परूँ।
षोडष गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

हरिगीतिका

प्रासुक सुगंधित द्रव्य सुन्दर दिव्य घ्राण सुहावनो।
धरि अग्नि दश दिश वास पूरित ललित धूम्र सुहावनो॥
तुम भक्ति भाव उमंग करत प्रसंग धूप सु विस्तरूँ।
षोडष गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूँ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

हरिगीतिका

चित हरन अचित सुरंग रसपूरित विविध फल सोहने।
रसना लुभावन कल्पतरु के सुर-असुर मन-मोहने।।
भरि थाल कंचन भेंट धरि संसार फल तृष्णा हरूँ।
षोडष गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने फलंनिर्वपामीति स्वाहा ।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

हरिगीतिका

शुभ नीर वर काश्मीर चंदन धवल अक्षत युत अनी।
वर पुष्पमाल विशाल चरु सुरमाल दीपक दुति मनी।।
वर धूप पक्व मधुर सुफल ले अर्घ अठ विधि संचरूँ।।
षोडष गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूँ।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडशगुणसंयुक्ताय श्रीसिद्धपरमेष्ठिने
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

हरिगीतिका

निर्मल सलिल शुभ वास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी।
शुभ पुष्प मधुकर नित रमैं चरु, प्रचुर स्वाद सुविधि घनी।।
वर दीप माल उजाल धूपायन, रसायन फल भले।
करि अर्घ सिद्ध-समूह पूजत, कर्मदल सब दलमले।।
ते क्रमावर्त नसाय युगपत, ज्ञान निर्मलरूप हैं।
दुख जन्म टार अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप हैं।।
कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अदूज शिव कमलापती।
मुनि ध्येय सेय अमेय, चहुँ गुण गेह, द्यो हम शुभमती।।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये नम: महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र जयतु

सोलह गुण सहित अर्घ्य

त्रोटक

दर्शन आवर्णी प्रकृति हनी, स्थिति अवलोक सुभाव बनी।
इक साथ समान लखो सब ही, नमूँ सिद्ध अनंत दृगन अबही।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधि ज्ञानावर्ण विनाश कियो, निज ज्ञानस्वभाव विकाश लियो।
समयांतर सर्व विशेष जनों, नमूँ ज्ञान अनंत सु सिद्ध तनों।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र जयतु

सुख अमृत पीवत स्वेद न हो, निज भाव विराजत खेद न हो।
असमान महाबल धारत हैं, हम पूजत पाप विडारत हैं।।

ॐ ह्रीं अतुलवीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपरीत सभीत पराश्रितता, अतिरिक्त धरै न करै थिरता।
पर की अभिलाष न सेवत हैं, निज भाविक आनंद बेवत हैं।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मविकाशक बोध लह्यो, भ्रम को परवेश न लेश कह्यो।
निजरूप सुधारस मग्न भये, हम सिद्धन शुद्ध प्रतीति नये।।

ॐ ह्रीं अनन्तसम्यक्त्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज भाव विडार विभाव न हो, गनादिक भेदविकार न हो।
निजस्थान निरूपम नत्य बसें, नमूँ सिद्ध अनाचलरूप लसें।।

ॐ ह्रीं अचलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र जयतु

गुण पर्यय परणति के भेद, अति सूक्ष्म असमान अछेद।
ज्ञान गहे, न कहै जड़बैन, नमों सिद्ध सूक्ष्म गुण ऐन।।
ॐ ह्रीं अनन्तसूक्ष्मत्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म-मरण युत धरे न काय, रोगादिक संक्लेश न पाय।
नित्य निरंजन निर-अविकार, अव्याबाध नमों सुखकार।।
ॐ ह्रीं अव्याबाधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक पुरुष अवगाह प्रजंत, राजत सिद्ध-समूह अनंत।
एकमेक बाधा नहिं लहैं, भिन्न-भिन्न निजगुण में रहैं।।
ॐ ह्रीं अवगाहनगुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र जयतु

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

काययोग पर्यापति प्रान, अनविधि छिन-छिन होवे हान।
जरा कष्ट जग प्रानी लहै, नमों सिद्ध यह दोष न सहै।।
ॐ ह्रीं अजराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काल-अकाल प्राण को नाश, पावैं जीव मरण को त्रास।
तासौं रहित अमर अविकार, सिद्ध-समूह नमूँ सुखकार।।
ॐ ह्रीं अमराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण-गुण प्रति है भेद अनन्त, यों अथाह गुणयुत भगवंत।
है परमाण अगोचर तेह, अप्रमेय गुण बंदूँ एह।।
ॐ ह्रीं अप्रमेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अनुकर्मतैं फर्स वर्णादि जानो, किसी एक वीशेष को किं प्रमानो।
पराधीन आवर्ण अज्ञान त्यागी, नमूँ सिद्ध विगतेन्द्रिय ज्ञान भागी।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियज्ञानधारकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिधा भेद भावित महाकष्टकारे, रमण भावसों आकुलित जीव सारे।
निजानंद रमणीय शिवनार स्वामी, नमों पुरुषाकृति सबै सिद्ध नामी।।

ॐ ह्रीं अवेदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशेष सकल चेतना धार माँही, भये लै भली विधि रहो भेद नाहीं।
तथा हीन अधिकाय को भाव टारी, नमों सिद्ध पूरणकला ज्ञानधारी।।

ॐ ह्रीं अभेदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजानन्द रस स्वाद में लीन अंता, मगन हो रहे रागवर्जित निरंता।
कहाँलों कहूँ आपको पार नाहीं, धरों आपको आपही आपमाहीं।।

ॐ ह्रीं निजाधीनजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

पंच परम परमात्मा, रहित कर्म के फंद।
जग प्रपंच विरहित सदा, नमों सिद्ध सुखकंद।।

त्रोटक

दुखकारन द्वेष विडारन हो, वश डारन राग निवारन हो।
भवितारन पूरणकारण हो, सब सिद्ध नमों सुखकारन हो।।
समयामृत पूरित देव सही, पर आकृत मूरति लेश नहीं।
विपरीत विभाव निवारन हो, सब सिद्ध नमों सुखकारन हो।।

अखिना अभिना अछिना सुपरा, अभिदा अखिदा अविनाशवरा।
यमजाम जरा दुखजारन हो, सब सिद्ध नमों सुखकारन हो।।
निर-आश्रित स्वाश्रित वासित हो, पर-आश्रित खेद विनाशित हो।
विधि धारन हारन पारन हो, सब सिद्ध नमों सुखकारन हो।।
अमुधा अछुधा अद्धिधा अविधं, अकुधा सुसुधा सुबुधा सुसिधं।
विधि कानन दहन हुताशन हो, सब सिद्ध नमों सुखकारन हो।।

शरनं चरनं वरनं करनं, धरनं चरनं मरनं हरनं।
तरनं भव-वारिधि तारन हो, सब सिद्ध नमों सुखकारन हो।।
भववास को त्रास विनाशन हो, दुखरास विनास हुताशन हो।
निज दासन त्रास निवारन हो, सब सिद्ध नमों सुखकारन हो।।
तुम ध्यावत शाश्वत व्याधि दहै, तुम पूजत ही पद पूज लहै।
शरणागत 'संत' उधारन हो, सब सिद्ध नमों सुखकारन हो।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दोहा

सिद्धवर्ग गुण अगम हैं, शेष न पावैं पार।
हम किंह विधि वरणन करैं, भक्ति भाव उर धार।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनज्ञानादिषोडशगुणयुक्तसिद्धेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु